

DPN 6240 कुब्जिका प्रासादसुवर्ण-

कलशवतारणी

KUBJIKĀ PRĀSĀDASUVAR KALĀŚĀ-
VATĀRANA JĪRṆODDHĀRAVIDHI,
SĀMKEPA.

Title :

जीर्णोद्धार विधि,

संक्षेप (सामग्रीसहित)

(Together with sāmagrī)

Run. No. 6931

Cat. No. 53

Micro. No.

Subject Tāntṛikakarmakāṇḍa

Religion : (Hindu) / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 29 x 11

Folios 9

Lines (in a page) 8/7 irregular

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor भवानीशङ्कर / राजेन्द्र श्रेष्ठ

Date: NS / SS / VS / KS 848

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thiyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

Fol. 61: अथ संक्षेपेण जीर्णोद्धारस्य क्रम उच्यते । ॐ अद्यास्मत्

कुब्जिका जीर्ण प्रासादासुवर्णकलशवतारण जीर्णोद्धार यज्ञकर्मणि शिवशक्त्यादि -
क्रमाचरणकर्म श्रीकृष्णमूर्तये नमः ॥ इति जीर्णोद्धारविधिः समाप्तः ॥



जीर्ण

उं ग्रीकडि कान्वायेनमः॥ संदिग्धयस्मिन् विवाहकूपी हनादिरुणीरुवगावलोकां। पापापुगात्तं त्वविना
घरुनी नगास्मिन् ग्रीकलकडि कान्वां॥ ॥ अथ संकयगाजीर्ण द्वावस्य कुमउद्यत। कडि काववत्ता
फुज धूलिगजितवतसा॥ ॥ प्रथमगाविद्यापीठगत्वा निवगक्कादिकु मार्जनकावयत्॥ ॥ यज
माननावय वन्दनपूष्यादिहृषली॥ सूर्यार्घ्यकथार्त्त॥ उं अथादि॥ उं अथास्मत्कडि काजीर्णपासा
दां कलगावतावतजीर्ण द्वावयत्तु कर्मलि निवगक्कादिकु मार्जनकर्तु ग्रीकलमार्तु अयाधानि
मः॥ उं अत्रिर्नसर्वनि॥ पूषा राजनादि॥ ॥ पुनर्वसमर्थली॥ पुनर्वसमर्थली॥ स्वल्पनसर्वप
जीकला॥ ॥ दद्युः प्रपार्थनां कथार्त्त॥ उं कलगाजीर्ण कथवि सर्वदाषावदं नृणां। तस्याद्वावकृतगा
निरपदं पुनया कानं गाक तर्पणपुतिष्ठार्त्तयाय।

लिपतत्ताथर्ननिमय जा ३

निहगाभुस्मिन् कथिर्न तया॥ जीर्ण द्वावविधानं च नयवा कडि तावदं। तस्मादधिष्ठमीदवि उद्वगा
मितवाहया॥ अग्न्यादि॥ ॥ वहिनागययत्तु मालत्त॥ यथायथाविधि मकुलकलगात्रिर्न॥ तमाथ
यदासाधनं॥ घनादिति तिलादिति॥ ॥ कलगापुतिष्ठ॥ तमादवस्यदकि लोभानि कलगास्कापनी
॥ आचार्यतावयसूर्यार्घ्यदत्ताया संकावयत्॥ यं च पुनर्वतत्तु उद्विक्ता॥ पुनर्वसमस्कारं॥ उं अथ
उमउलाकावति॥ कलगागृहली॥ अर्घ्याणां दकनसिद्धिर्न॥ पांशुपतामुल॥ तां धादकनयवली॥
उं गम्याः सवितः सर्वाः समूहाश्च सर्वां सिवा। सर्वाणि तीर्थानि तदा तथेव जलदा कुदा॥ आया
नुयजमानस्य इवितकथकावका॥ उं ॐ मे मनी गयमूनस वस्वती सुदूक्ष मी सवताय विद्या प्रसि
न्यामवृद्ध धवतस्मया जीकी जगत्तु या पुषादया॥ यं च सृजती वायां वस्यत्त॥ अमुमकुल॥ उं

वमुलवस्यत्त अमुल॥ उं वसाः पवित्रमसि॥

ॐ श्रीगणेशाय नमः

जीर्ण

नकाहनेवलगाहनेवेष्ठीमिदमहर्नवलगमृत्तिगामिरीमनिष्ठायममत्यानिवखानदमहर्नवल
गमृत्तिगामिरीमसमानायमसमानानिखानदमहर्नवलगमृत्तिगामिरीमसर्वधर्ममसर्वधर्नि
वखानदमहर्नवलगमृत्तिगामिरीमसजामाजमसजामानिखानात्कृष्णकिनामि॥ ॥ (गमयस
वयद्वर्वालीवर्काकावयत् ॥ (गमयकवचमकुल॥ उंमानकाकतनयमानश्रायविमाना (गममात्रा
अ (पूरीविष॥ मानावीवाडुहामिनावधीद्विष्मरु॥ सदमित्वाहवामरु॥ ॥ सर्वय॥ उं००मात्रुडा
यतवसकपदिनरुयदीवायपुहवामरुमनी॥ यथासमसुद्धिपदवहुष्यदविश्वीपूष्टेगमम
स्मिन्ननाहुवी॥ ॥ इवा॥ उंकाउत्काउत्पुवाहनिपयूष॥ ययूषस्यनि। यवानाह्वेपुतन
सहस्रलगतनव॥ ॥ वीचपन्त्रवसमर्षी॥ ययूषपुलव॥ उंअमृत्पुवा (गमनसंकाजा

2

लूपल. जीर्णवल. वीचपन्त्र. तय १

पलाकृष्णीवाअग्नेयावनातपूरुकात्सानखनीमअधस्तधन्यागिनाव (वावामावाकासो
मापोषुस्यामानाया० सोर्ययामो (वतयेकषुधयावयात्वाशेलासमगर्कोगकावायअ (वत
पूरु००नुयस्यययवहृद्वेषुवावामन॥ ॥ बीजयवरुलेनिधाय॥ हृदयमकुल॥ उंया॥ रु
निनीयारुलापूषायासपूषिनीवरुस्यति। पुस्तकाकानामृत्त००रुस॥ ॥ घटन्यासीकृष्णात्॥ उंया
यकष्ववायअमुयरु॥ उंयापकष्ववाय हृदयायनम॥ उंयापकष्ववायनिमसनेम॥
उंयापकष्ववायनिखोयेनम॥ उंयापकष्ववायकववायनम॥ उंयापकष्ववायनेरुतयायन
म॥ उंयापकष्ववायअमुयनम॥ उर्वीर्गत्यास॥ ॥ उंयलवासनायपादुकीपूजयामि॥
आधवगकायष्टपूषिकासनी॥ ॥ यथायवमहर्ननश्रुलि॥ हृदयादिपूजनी॥ ॥ दि

जयसा०१ ग्यामानकाजिपुता
वक्तन. सित्तर. अरुत. ऊजम. पूषा. धूप. दीप. वलि. स्वस्व. वंदन. पूजा २

जीर्ण

ग्वलिंददत्त ॥ उं हं ॐ नुय स्वाहा ॥ उं हं अग्नय स्वाहा ॥ उं हं यमाय स्वाहा ॥ उं हं नेर्जत्याय स्वाहा ॥ उं हं व
रूपाय स्वाहा ॥ उं हं वायव स्वाहा ॥ उं हं कवचाय स्वाहा ॥ उं हं ॐ गानाय स्वाहा ॥ उं हं अथस स्वाहा ॥ उं हं
उद्यय स्वाहा ॥ ॥ वृडगा निवर्लि ॥ उं हं वृडय ४ स्वाहा ॥ पूर्व ॥ उं हं मातृय ४ स्वाहा ॥ दक्षि ॥ उं हं
गालय ४ स्वाहा ॥ पश्चिम ॥ उं हं यक्षय ४ स्वाहा ॥ उत्तर ॥ ॥ उं हं गृहय ४ स्वाहा ॥ ॐ गान ॥ उं हं अमृय
४ स्वाहा ॥ अग्ने ॥ उं हं वक्षय ४ स्वाहा ॥ नेर्जत्य ॥ उं हं नागय ४ स्वाहा ॥ वायो ॥ ॥ उं हं नक्षत्रय ४ स्वाहा
॥ मण्डलम ॥ ॐ गान ॥ उं हं गानय ४ स्वाहा ॥ मण्डलम ॥ ॐ वक्षय ४ स्वाहा ॥ मण्डलम
॥ नेर्जत्य ॥ उं हं कृपाय स्वाहा ॥ मण्डलम ॥ ॐ वायय ॥ ॐ निवृडगा निवर्लि ॥ ॥ वक्षय ४
हृदि दत्तायुवनस्य गन् ॥ वद ॥ उं हं गाना वमिनु मविता वमिनु ० हव हव स्रव ० हव मिनु ॥ द्यामि

3

गर्कपूरुतमिनु ० स्वस्तिनामधवाधालिनु ॥ दिग्वलिपुति ॥ ॥ उं असीखाता सरुमा विथं वृडा अविह
म्या ॥ तं वा ० सरुमया जनवधनानि नमसि ॥ वृडगा निवर्लिपुति ॥ ॥ तत ४ कलगा लनार्थ ॥ गानिहा
मंसमायवत् ॥ मध्या अक्षी वद्वर्ति ॥ मूलनाष्टाधिकं गती ॥ कुरुयात् ॥ १०८ ॥ उं अकनू कर्म कर्म कृत
४ सरुवावामेयाववा ॥ दक्षय ४ कर्म कृत्वा अर्कं पुनसवावुव ॥ पश्च ॥ ॥ ग्रवन कलगा स्पर्गनी ॥ ॥ तत ४
या साक्षापविगकृत् ॥ गुर्वगा ॥ आवाय ॥ उं अयादि ॥ उं अस्मत्कृत्तिका जीर्ण वासादात्स्वर्क कलगा व
तावनी निमिक्त कलगा जीवा कर्षल कर्तुं गी सूर्यायार्थानमः ॥ उं नभामु सूर्याय सरुमवग्मय ॥ सरुम
गा रानिहर्गवात्मन ॥ सरुमगा ॥ गहवहावहाजिन ॥ सरुमसीखायुगधावि ॥ नमः ॥ उं आकृष
नवजसावर्कमाना निवगय नमर्गमर्षय ॥ दिव ॥ अथ नसविता वथेनायवाजाति उवनानिययन् ॥ तास्व

जीर्ण

वायव्यं नमः ॥ पूषा राजनस्यर्गं ॥ उं त्रिकां गुह्यं याम (अ) कृष्णमध्यायनायना । काटिमी कववीजस्य
 श्रीकृत्तिकास्थानमाच्यते ॥ उं सिद्धिं वसु क्रियावसु वृद्धिं वसु धनायस्य । पूषि वसु गनीयस्य ॥ अग्नि वसु गृह
 हंसम ॥ सर्वविघ्नपुणमर्गं सर्वान्निकर्तुं ॥ आयुः पूषेव कामेव लक्ष्मी पूषि विवर्द्धनी ॥ यथा वा न
 पुत्रावाप्तां कवर्चं हवति वावर्णी । तज्जदेव विद्या तानी ॥ अग्निं वसु वावर्णी ॥ उं अस्मत्कृत्तिकाजीर्णपासा
 मात् स्वर्णकलगावतावतानिमित्तकलगाजीवाकर्षणनिमित्तार्थं पूषा राजनं नमस्कृत्यामि ॥ ॥ तत्तज्ज
 विरुद्धं ॥ उं पाणाकर्षणमनुस्य वसु विष्णु उष्य ॥ अथ रुः सामानि रुन्दाति ॥ उं संप्रकृत्तिकादवता
 याः पाणाकर्षणविनिधागः ॥ ॥ अथ संप्रकृत्या ॥ कृत्तिकाजीर्णपासा
 दकलगास्ते जीवाकर्षणकर्मार्हकनिधयः ॥ ॥ तत्तज्जग्निकलसु जलन स्वर्णकलगास्ते ययः ॥

४

पृथ २

ऊर्णपूषा नमः ॥ अग्निकलगा निधाययत ॥ स्वर्णवर्णाय ॥ ॥ श्रीसर्वार्थाय ॥ ॥ तत्तज्जग्निकलगापूज
 नी ॥ वन्दनं सिद्धिं वसु अकृतं यज्ञाय वीतं धनं दीपं नैवर्ण्यं दत्वा स्वस्ववन्दनं ॥ ॥ अथ ॥ ॥ उं नृषद्वय
 मध्यास्ते यास्मिन्नायकनृपिणी । कृद्गमादकनृपावः श्रीकृत्तिकास्थानमाच्यते ॥ उं अस्मत्कृत्तिकाजीर्णपासा
 कनमानयति कर्षणं । स्वस्य स्वकर्तृ रुद्रिकां कां पीव वासिनी ॥ अस्मत्कृत्तिकाजीर्णपासा ॥ अथ गन्धादि
 ॥ ॥ आचार्यलावम्य गुर्वस्मत्वा पंचपलवनरुतगुह्यं विधाय ॥ दवस्या नृपयण स्वर्णवीर्यपुत्र
 यामः ॥ ॥ तदनुस्वर्णकलगा गायत्री न्यासः ॥ उं नृकुलकोलिनिविमलं मरुमालिनि सुधीमहि ।
 तन्नः कृत्तिकापवादयात् ॥ दक्षवाहो ॥ ॥ कृत्तिकापवादयात् ॥ उं किं कामिनि विमलं विरुद्धाहिनिधी
 महि । तन्नः कृत्तिकापवादयात् ॥ वामवाहो ॥ २ ॥ उं भूमातृद्विनिविमलं कुलकोलिनिधीमहि । तन्नः कृ
 तत्तज्जग्निकलगापूषा नमः ॥ ॥ ३

तत्तज्जग्निकलगापूषा नमः ॥ ३

सकयदा नै २ उन्नीय शुद्धं रुद्र ७
सरुमानिपुनिष्ठा ३

निमन्नाडा विय ३

श्रीरूपनरयणनरयणनरयणनरयण
 नरयणनरयणनरयणनरयण

[illegible]

विश्वकर्मलकाका
यक. गहन ३

१. ग्रा. वा. र्थ. ल. व. म. स. स्या. द्या. दि.

पञ्चवक्त्रः ।

लङ्घानूक्तमादर्वः प्रार्थयत्वा रुमाययत् ॥ ॥ ततः ॥ गणिकलङ्घाकमार्जनं ॥ जयस्तु ॥ गणिकलङ्घा
धमादूर्तिदत्तः ॥ ॐ अम्ब अम्बिक अम्बा विकनमानयनिकम्बनः ॥ स्वसत्यस्वकस्तुष्टिकांकीपीववासिनीस्वारा ॥
धुवनस्य ॥ गतः ॥ ॥ दवरुवसाधवस्तुष्टयनमयातावगणिकिद्यत्सः पूजानित्यकर्मयायद्वया ॥ ॥ ० ॥ वाक्का
दिदग्गयादि ॥ राजादगयजमानप्राचार्यः ॥ तर्षातिलादूर्तिदत्ता ॥ सैख्यादूर्ति ॥ ॐ अस्सैख्याता ॥ ॥ गणिका
दूर्ति ॥ ॐ शो ॥ गणिकि ॥ ॥ पृष्टिकादूर्ति ॥ ॐ शुम्बकं ॥ ततायवक्ष्याद्यादिपृष्टबुद्धि ॥ ॥ अन्तर्वलिवहिवर्लैद
दत्तः ॥ ॥ वाक्कलपूजनी ॥ नेवद्यादिदग्नि ॥ घृतदीपवृत्तिकादार्म ॥ अक्षारुवगणघृतादूर्ति ॥ १०८ ॥ ॥ जि
रादूर्तिः पीववावृत्तः ॥ बहुध्व्यादि ॥ वद्विगयती ॥ ॐ दवरुवसाधवस्तुष्टयनमयातावगणिकिद्यत्सः ॥ वद्विगयती ॥ व
ल्लैदद्यात् ॥ वल्लिहवली ॥ दक्षिणादानं ॥ सैगवपागनी ॥ ॐ वार्यगुन्धामि ॥ उयस्यगर्नि ॥ पवित्रमावर्नः पुत्नी

दंवददिल्लदवाणीवादिखं कादि॥

[illegible]

वचनसिद्ध

रजोर्लङ्घनया उपहारधनं ॥ सासिमात्रका ॥ सिमन्तवात ॥ साधविपात ॥ सादूयान ॥ साधवपुत्रा कस्ति ॥
साखर ॥ सावदूवाक ॥ रं कृक ३ ॥ रामवक ३ ॥ सिधेव ॥ अकृतय २ ॥ पूवाक ३ ॥ अष्टादशसमिध ॥ ॥ स्नानवा ॥
ग ॥ कययुव ॥ मास ॥ काशत ॥ म्नात ॥ उका ॥ पुका ॥ सायूवहा मव ॥ सादूयामव ॥ अष्टकसविध ॥ ॥ उवउ ॥ हवव ॥ अर्वव ॥
हवव ॥ मवव ॥ यिपवि ॥ १० ॥ नृपकगव ॥ पशुकगव ॥ सप्तस्व ॥ सावयासाकां ययं ॥ गुं गुविका १० ॥ अउव ॥ चन्दन ॥
वि १० ॥ वाधून १० ॥ द्वादलस्नान १० ॥ कंदालता १० ॥ कृक ३ ॥ कन्ध ॥ अद्वान ॥ वाता ॥ ५ ॥ न ॥ ३ ॥ लज्जवा ॥ गव ॥
मवसिन्व ३ ॥ सिन्धुवका ॥ पुक १ ॥ अर्लगतहवमात्रका ॥ चतु ८ ॥ समवत ॥ सावदीहि ३ ॥ नाया ॥ पूनाया ॥ ऊऊमका ॥
मात्रका ॥ कृक ३ ॥ उउदन ॥ दध्नादन ॥ कृगयउ ॥ सिनका ॥ उपयमनकृ ॥ यवि ३ ॥ कृग ॥ अउविपात ३ ॥ कृगमात्र
का ॥ चकन ॥ आन्तावा ॥ आधून ॥ ॥ ग्नातिकल ॥ ग्ना ॥ गिवग ॥ किकल ॥ स्नानकवा २ ॥ ना ॥ धादका ॥ यवस ॥ उका ॥ ग्व ॥ ३ ॥ ग
रं नि सवं गाहावा ॥ काग ॥ खव ॥ खिय ॥ रं ॥ उ ॥ रं ॥ र्वा ॥ यं ॥ य ॥ प ॥ ल ॥ व ॥ त ॥ अ ॥ सि ॥ ग ॥ ३ ॥ स ॥ व ॥ र्वा ॥ य ॥ ग ॥ रं ॥ र्वा ॥ दि ॥ वा ॥ य ॥ स ॥ उ ॥ न ॥ ध ॥ वि ॥ मा ॥ त्र ॥ का ॥
नि ॥ स ॥ वा ॥ व ॥ आ ॥ श ॥ द ॥ कि ॥ ॥ ॥ म ॥ य ॥ क ॥ न ॥ सा ॥ २ ॥ ॥ र ॥ २ ॥ ल ॥ य ॥ ल ॥ अ ॥ हा ॥ प ॥ ल ॥ ॥ य ॥ य ॥ प ॥ त्र ॥ २ ॥

विपरीतार्थः॥

जीर्ण

गानिकलगायुजाया॥	सायुजायात।
गोर्धदकावमुत्पव	निर्मकन। रूपायवा
सुजका॥ गमय। सव	वदन। सिद्धव
याद्वर्षिपवपल्लवा	श्रुत यक्षप
वीजरुतवदन। सि	वीत। पूष्य। धूप
द्वय। श्रुत। ऊजम	दीय। गमय। स
पूष्य। धूप। दीय। वलि	ग्रीवादिवाय
गरुत्रिपूजायायूजा	संरुं श्रावति
रुव। गहाया। तिलक	पतिष्ठा। निस
कृष्णि। वदनसिद्ध	गोवर्धदकि। ल
श्रुत यक्षपवीतयू	
ष्य। धूपदीयनेवश।	
गानिकलगा	